नेपाल में राजा का आत्मघाती कदम

• आलम

नेपाल नरेश ज्ञानेन्द्र द्वारा आपातकाल की घोषणा नेपाली जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों के प्रचण्ड आघातों से शासक वर्गों में मची हड़बोंग का नतीजा है। अपनी जर्जर हो चुकी सामन्ती निरंकुश सत्ता को बचाने के लिए नरेश ने आत्मघाती कदम उठा लिया है। राजदरबार के इस कदम ने नेपाल में गृहयुद्ध के हालात पैदा कर दिये हैं और नेपाली जनता का मुक्ति संघर्ष निर्णायक दौर में पहुंच गया है।

नेपाल के अन्दरूनी हालात की जानकारी रखने वाले लोगों को नेपाल नरेश के इस कदम से कोई आश्चर्य नहीं हुआ है। नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व में पिछले एक दशक से चल रहा जनयुद्ध बर्बर दमन-उत्पीड़न के बावजूद कामयाबी की ओर बढ़ रहा है। अभी कुछ हफ्ते पहले ही माओवादी नेतृत्व का यह बयान आया था कि हमने रणनीतिक प्रत्याक्रमण का पहला चरण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। उधर शासक वर्गों के खेमे में जनयुद्ध से निपटने के सवाल पर फूट बढ़ती जा रही थी। नेपाली कांग्रेस के दोनों धड़े और नेपाली कम्युनिस्ट पार्टी (एमाले) ही नहीं, राजतंत्र समर्थक मानी जाने वाली सद्भावना पार्टी के कई नेता नेपाल में 'लोकतंत्र' बहाली के लिये माओवादियों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने की वकालत करने लगे थे। इन नेताओं ने यह विचार भी सार्वजनिक रूप से रखना शुरू कर दिया था कि देश को 'संकट से उबारने' के लिये माओवादियों द्वारा प्रमुख रूप से उठायी जा रही नयी संविधान सभा की माँग जायज है। इन हालात में नरेश ज्ञानेन्द्र की सत्ता के लिये खतरा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था। यही वे हालात थे जिनके मद्देनजर नेपाल नरेश ने अपने प्यादों को बर्खास्त कर अपनी सत्ता बचाने के लिये आपातकाल की घोषणा की।

अब यह सच्चाई किसी से छुपी नहीं रह गयी है कि नेपाली जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों को आतंकवाद के नाम पर कुचलने के लिये अमेरिका, ब्रिटेन, बेल्जियम जैसे साम्राज्यवादी देश ही नहीं बल्कि भारतीय शासक वर्ग भी भारी मात्रा में सैनिक साजो-सामान और आर्थिक मदद पहुँचा रहे हैं। अब यही ताकतें नेपाल नरेश द्वारा आपातकाल की घोषणा का विरोध करती नजर आ रही हैं। इन देशों के हुक्मरान नेपाल में लोकतंत्र और मानवाधिकारों की हत्या को लेकर काफी "चिन्तित" हो गये हैं। इन सभी देशों की ये मुद्राएं दिखावटी हैं। सच बात यह है कि किसी को भी नेपाल में लोकतंत्र बहाली की कोई चिन्ता नहीं है। अगर सचमुच होती तो लम्बे समय से माओवादियों द्वारा उठायी जा रही नयी संविधान सभा की माँग के समर्थन में ये नेपाली शासक वर्गों पर दबाव बनाते। सबकी साझा चिन्ता यह है कि नेपाल में माओवादियों के हाथ में सत्ता की बागडोर नहीं आनी चाहिए। अमेरिका और उसके सहयोगी देश नेपाल को एक महत्वपूर्ण रणनीतिक चौकी के रूप में देखते हैं जहां से वे दक्षिण एशिया में अपने साम्राज्यवादी हितों की मजबूत किलेबंदी कर सकें और चीनी एवं भारतीय शासक वर्गों के विस्तारवादी मंसूबों पर भी नकेल कस सकें। इसलिए वे नेपाल में माओवादियों के हाथों में सत्ता की बागडोर आना बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसीलिये उन्होंने जनता के क्रान्तिकारी आन्दोलन को आतंकवाद घोषित कर रखा है और उससे निपटने के बहाने लगातार अपनी घुसपैठ बढ़ाते जा रहे हैं।

भारतीय शासक वर्ग की रणनीति यह थी कि अगर नेपाल नरेश संवैधानिक राजतंत्र के ढाँचे को स्वीकार कर पूँजीवादी लोकतंत्र के मुखौटे को आगे करने के लिये तैयार हो जाये तो लोकतंत्र की रक्षा के नाम पर माओवादियों को कुचलने में वह और अधिक मुस्तैदी से मदद करता। लेकिन आपातकाल की घोषणा और पूँजीवादी राजनीतिक पार्टियों को रंगमंच से पूरी तरह धकेल देने की नरेश की कार्रवाई ने भारतीय शासक वर्ग की रणनीति को फिलहाली रूप से धक्का पहुँचाया है। इसीलिये भारत सरकार लोकतंत्र-लोकतंत्र चिल्ला रही है। आपातकाल की घोषणा के बाद नेपाल नरेश से अपनी नाराजगी जताने के बावजूद भारत सरकार ने माओवादियों को कुचलने के लिये सैनिक साजो-सामान और अन्य प्रकार की मदद भेजना जारी रखा है। सभी जानते हैं कि नेपाल में भारतीय पूँजीपतियों के जबर्दस्त आर्थिक हित भी दाँव पर लगे हैं। नेपाल का 65 प्रतिशत आयात और 80 प्रतिशत निर्यात भारत के साथ होता है। साथ ही इतनी महत्वपूर्ण रणनीतिक चौकी को भारतीय शासक वर्ग अपने हाथ से आसानी से निकलने नहीं देगा। वह यह भी कतई नहीं चाहेगा कि इस चौकी पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों का प्रत्यक्ष नियंत्रण कायम हो जाये।

नेपाल में आपातकाल की घोषणा कर नेपाल नरेश ने देश की बुर्जुआ राजनीतिक ताकतों के लिए भी इधर कुआँ उधर खाई जैसी स्थिति पैदा कर दी है। जनता के बहुसंख्यक हिस्से में अपना आधार बना चुके माओवादियों ने आपातकाल के खिलाफ देश की सभी जनवादी और राजतंत्र विरोधी ताकतों के एक व्यापक मोर्चे का आह्वान किया है। नेपाली कांग्रेस और संशोधनवादी एमाले सहित सभी बुर्जुआ राजनीतिक पार्टियों के लिये दुविधा की बात यह है कि वे अगर मोर्चा बनाते हैं तो भी पहलकदमी माओवादियों के हाथ में होगी और नहीं बनाते हैं तो वे जनता की नजरों से और गिर जायेंगे।

नेपाल के तमाम बुर्जुआ नेता जनता से राजशाही के खिलाफ सड़कों पर उतरने का आह्वान कर रहे हैं, लेकिन बेदिली से। कोई वास्तविक मोर्चा बनाने की दिशा में ठोस पहल करते वे दिखायी नहीं दे रहे हैं। वे बेबस होकर यह देख रहे हैं कि किस

(पेज 47 पर जारी)

है। इस संघर्ष में 'दिशा' के नेतृत्व में विजय, दानिश, योगेश, वृष्टि, अमन, जिया, और गुफरान ने अधिक पहलकदमी दिखाई। गौरतलब है कि इस अराजकता के खिलाफ संघर्ष के पहले कुछेक छात्रों के बिखरे प्रयास असफल हो चुके थे। ऐसे में इस आन्दोलन की विजय यह साबित करती है कि अभी भी संगठित प्रयास किसी भी प्रशासन को झुका सकते हैं।

नववर्ष के अवसर पर नए संकल्प

31 दिसम्बर 2004 को नववर्ष की पूर्वसंध्या पर करावलनगर, दिल्ली में **नौजवान भारत सभा** और **बच्चा पार्टी** एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कुछ क्रान्तिकारी गीत और दो नाटक पेश किये गए। इस कार्यक्रम में नौभास ने इलाके की समस्याओं की चर्चा करते हुए वहाँ के बाशिन्दों का इस ओर ध्यान खींचा कि वहाँ साफ पानी तक की सुविधा नहीं है। नौभास के संयोजक कपिल ने अपने वक्तव्य में कहा कि साफ पानी, साफ-सफाई हर नागरिक का अधिकार है और इस अधिकार के लिए हमें संघर्ष करना चाहिए। एक अन्य सदस्य अभिनव ने कहा कि इतना वक्त बीत जाने के बाद भी करावल नगर के आधे से अधिक हिस्से में अभी भी पक्की सड़क नहीं है। नौजवान भारत सभा ने इन मुद्दों को लेकर संघर्ष करने का संकल्प लिया और जनसमुदाय ने इसमें भागीदारी का आश्वासन दिया।

नौजवान भारत सभा द्वारा आयोजित मेडिकल कैम्प में अपनी जाँच कराते मजदूर

इसके पहले **बच्चा पार्टी** के बच्चों ने 'गिरगिट' नामक नाटक और साम्प्रदायिक सद्भाव से सम्बन्धित कुछ गीत गाए। **नौजवान भारत सभा** के सदस्यों ने सफदर हाशमी के नाटक 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं' का मंचन किया और कुछ क्रान्तिकारी गीतों की प्रस्तुति की।

नौजवान भारत सभा द्वारा मजदूरों के लिए निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

नौजवान भारत सभा 19 से 21 नवम्बर 2004 को प्रकाश विहार करावलनगर की मजदूर बस्ती में मजदूरों के लिए एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया। इस शिविर में लोगों की डाक्टरी जाँच हुई और निःशुल्क दवाएँ भी दी गईं। तीन दिनों के दौरान शिविर में करीब 1800 मजदूरों की जाँच हुई और दवा दी गई। इनमें से अधिकांश गन्दे पानी की वजह से पेट की बीमारियों के शिकार थे।

शिविर के आखिरी दिन कार्यक्रम स्थल पर लगी भीड़ एक जनसभा में तब्दील हो गई। **नौजवान भारत सभा** के प्रसेन ने सभा में उपस्थित मजदूरों और उनके परिजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वैसे तो चिकित्सा सरकार द्वारा दी जाने वाली निःशुल्क सुविधा होनी चाहिए, मगर ऐसा न होने की सूरत में हम इस तरह के शिविर का आयोजन कर रहे हैं। मगर यह समस्या का समाधान नहीं है। हमें इस बात को समझना चाहिए कि इस अधिकार के लिए दृढ़ संघर्ष करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं।

दिल्ली विश्वविद्यालय में सचल पुस्तक प्रदर्शनी

गोरखपुर, लखनऊ, उत्तरांचल, पंजाब, हरियाणा के दौरे के बाद 23 जनवरी को **जनचेतना सचल पुस्तक प्रदर्शनी** की वैन दिल्ली विश्वविद्यालय पहुँची। यह रिपोर्ट लिखे जाने तक वह विश्वविद्यालय के उत्तरी परिसर मे ही थी। यह वैन पूरे देश में प्रगतिशील, स्वस्थ और विश्व-प्रसिद्ध साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए लगातार देश के विभिन्न हिस्सों में घूम रही है। दिल्ली विश्वविद्यालय में वैन के साथ **दिशा** के कार्यकर्ताओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये। छात्रों ने वैन पर मौजूद पुस्तकों में काफी दिलचस्पी दिखायी और इस मुहिम की काफी प्रशंसा की। प्रदर्शनी में गोर्की, प्रेमचंद, जैक लण्डन, चेखव, अप्टन सिंक्लेयर सरीखे साहित्यकारों की रचनाओं के अलावा भगत सिंह और उनके साथियों का परिवर्तनकामी साहित्य भी मौजूद था।

नेपाल में राजा का आत्मघाती कदम

(पेज 48 से जारी)

तेजी के साथ छात्रों-युवाओं और मध्यवर्ग की आबादी के बीच उनका बचा-खुचा जनाधार माओवादियों के पाले में खिसकता जा रहा है। उन्हें इसका डर सता रहा है कि मोर्चा बनने का अधिकतम लाभ माओवादी ही उठा ले जायेंगे और उनकी जमीन पूरी तरह खिसक जायेगी।

बहरहाल, नेपाल नरेश ने आपातकाल की घोषणा कर न केवल आत्मघाती कदम उठा लिया है वरन इससे पहलकदमी पूरी तरह माओवादियों के हाथ में आ गयी है। बदहवासी में ऐसी गलतियां दुनिया के सभी जालिम हुक्मरान किया करते हैं। नेपाली जनता के क्रान्तिकारी जनसंघर्षों पर दमन का नया दौर शुरू हुआ है। इसका मुकाबला करते हुए माओवादियों के नेतृत्व में नेपाली जनता पुरानी सड़ी-गली सत्ता को उखाड़ फेंककर नयी जनसत्ता कायम करने में कामयाब होगी या नहीं इसका जवाब भविष्य में मिलेगा। लेकिन, इतना तय है कि संघर्ष जिस ऊँचाई तक पहुँच चुका है और जिस गहराई तक जड़ें जमा चुका है उसे देखते हुए उसे पूरी तरह नेस्तनाबूद करना सम्भव नहीं।